'लिव टुगेदर' समाधान या समस्या?

भारतीय संस्कृति परिवार को एक सुन्दर सामंजस्य में पिरोने की एक अमूल्य धरोहर है। एक दूसरे के भावों को जानना, आदर करना, समभाव, नि: स्वार्थ शुभकामना रख एक दूसरे को आगे बढ़ाना जैसे मौलिक गुणों से ओत-प्रोत है। आदि काल में प्रत्येक दैवी मनुष्य भारतीय संस्कृति के पुरोधा थे। इसी का उदाहरण रहा कि लोग भावनात्मक परिधियों में बंधे 'लिव टुगेदर के साथ-साथ 'डाई टुगेदर' के मजबूत धागों में बंधे थे। वास्तव में लिव टुगेदर तथा डाई टुगेदर का अर्थ जो भी जीवनसाथी हो हर परिस्थिति, समस्या, दु:ख, सुख, मान अपमान में मददगार बनें। आपस में अच्छी समझदारी हो। समाज में पूर्व में अपनाये गये डाई टुगेदर का विकृत रूप सती प्रथा आदि कुरीतियों में परिवर्ततन हुआ। संस्कृति और संस्कार के वास्तविक मूल्यों को न जानने के कारण इसका तेजी से हनन हुआ है। भारतीय वैवाहिक पद्धति दुनियां में सर्वोच्च और सुदृढ़ मानी जाती है। भारतीय परम्पराओं के अनुसार वैवाहिक एक ऐसा बन्धन है जिसमें स्त्री तथा पुरुष साथ-साथ सात जन्म तक जीने और मरने का दृढ़ संकल्प करते है, ऐसी लोगों की मान्यता है। भारत के गाँवों में बसने वाली जनता में आज भी इसकी परछाई संयुक्त परिवारों के रूप में देखी जा सकती है। पश्चिमी देशों के लोग फैशन के हवाई संसार में इतना आगे बढ़ चुके हैं कि वहाँ जिस संस्कृति को अपनाया जा रहा है। उसका पूरे सृष्टि चक्र में कही भी जिक्र नहीं है।

क्या है 'लिव टुगेदर'- पश्चिमी देशों के लोग तेजी से विघटित होते पारिवारिक रिश्तों का दूसरा विकल्प लिव टूगेदर के रूप में मान रहे है। इसमें हर एक वयस्क स्त्री व पुरूष अपनी स्वेच्छा से एक साथ लम्बे समय तक रहकर जब एक दूसरें के स्वभावों और संस्कारों से पूर्ण परिचित हो जाये तब यदि सहमति हो तो परिणय के बन्धन में बंधे अथवा अपना दूसरा विकल्प ढूढ़ें। अभी तो कई देशों में (खासकर मुस्लिम बाहुल देशों में) बालिकाओं की वयस्कता की उम्र 18 साल से घटाकर 14 साल कर दिया गया है। इसके चलते पिछले कुछ सालों में 'लिव टुगेदर' का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। इसकी व्यापक पैमाने पर शुरूआत विकसित पाश्चात्य देशों में हो रहा है। दूर के ढोल सुहावन के रूप में इसकी साया अन्य देशों में भी पड़ने लगी है। इसमें भारत भी सम्मिलित है। कई लाईफ स्टाईल तथा मनोवैज्ञानिक पण्डितों का मानना है कि इससे समाज का रूप बदलेगा और एक नयी दिशा की शुरूआत होगी, जबकि कुछ बुद्धिजीवी वर्ग इसके खिलाफ है।

'लिव टुगेदर' का परिणाम: आज जब कि नि:स्वार्थ, आत्मिक प्यार और विश्व वसुधैव कुटुम्बकम की नृसंश हत्या हो चुकी है, ऐसे परिवेश में लिव टुगेदर को जिन लोगों ने एक पारिवारिक रिश्तों को मजबूत करने के लिए दूसरे विकल्प के रूप में अपनाया था वह एक समस्या के रूप में पनपी है। सबसे ज्यादा इसका विपरित असर पाश्चात्य आदि देशों में देखने को मिला है। आज अमेरिका में प्रतिवर्ष 50 हजार लोग इसके प्रभावित हो रहे है और अकेले जीवन व्यतीत कर रहे है। कुछ दिन पहले अखबारों में एक खबर छपी थी कि एक अमेरिकी महिला अपने पुरूष मित्र के साथ 40 साल बिना वैवाहिक जीवन के बिताया परन्तु 45 साल बाद उनमें किसी कारणवश रिश्ते टूट गये और वह अकेली हो गयी। अब वह अकेले रहने लगी अब वह अपना घर बेचने के लिए ऐसा ग्राहक ढूढ़ रही है जो, उसे भी खरीदे। यह लिव टुगेदर का ही परिणाम है। असल में लिव टुगेदर अपनाना कोई बुरा नहीं है परन्तु किस परिवेश में किस हद तक यह

होना चाहिए इसका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। आपसी सहयोग, दु:ख व सुख में एक दूसरे की मदद, सुरक्षा की भावना विकसित करना तथा अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भी उचित है परन्तु इसका सही मायने में सम्बन्ध होना चाहिए।

'लिव टुगेदर' बनाम 'डाई टुगेदर': लिव टुगेदर को अगर डाई टुगेदर कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी आज इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। वास्तव में लिव टुगेदर के साथ-साथ मनुष्य को डाई टुगेदर का भाव होना चाहिए। परन्तु आज के पीढ़ी में युवक और युवतियां इसका अनुचित अर्थ ले रहे है। कई बार तो ऐसे देखने को मिलता है कि एक दूसरे से दैहिक प्यार होने के कारण साथ-साथ जीने और मरने की कसमें खाते है और यदि पारिवारिक, सामाजिक परिस्थितियां आती है तो उसमें आपा खो बैठते है और अपनी जीवनलीला ही समाप्त कर लेते है। आज यह समस्या तेजी से बढ़ रही है। वास्तव में डाई टुगेदर की प्रथा प्राचीन काल से ही है परन्तु उस समय इसका साकारात्मक रूप था। मीरा का कृष्ण के साथ, महात्मा गांधी का अहिंसा, स्वामी विवेकानन्द का पवित्रता तथा इसी तरह अन्य लोगों का भी इसी तरह किसी न किसी मानवीय मूल्यों के साथ लिव टुगेदर तथा डाई टुगेदर का वास्ता होने के कारण आज पूरी दुनियां में अनुकरणीय है जिनके पदचिन्हों पर लोग चलकर अपने जीवन को संवारने की कोशिश करते है। हमारा साथ, हमारे सम्बन्ध ऐसे हो जो हम समाज में आदर्श के रूप में जाने जाये। लोग हमसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़े तथा दूसरों को सम्बल प्रदान हो।

लिव टुगेदर की सार्थकता: आज के सन्दर्भ में मनुष्यों में मूल्यों का तेजी के साथ पतन हो रहा है। साथ-साथ रहने के लिए तथा एकता की डोर मजबूत करने के लिए मूल्यों का होना अति आवश्यक है। लिव टुगेदर केवल पति और पत्नी के रूप में ही नहीं लागू हो सकता है। भाई, बहन, माता-पिता, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री के साथ रहने के लिए भी लिव टुगेदर का होना जरूरी है। जब तक सम्बन्धों मे इसकी प्रगाढ़ता नहीं होगी। तब तक लिव टुगेदर का सपना साकार नहीं हो सकता। आज तो इसकी डोर इतनी कमजोर हो गयी है कि अपना ही अपनों का खुन करने में संकोच नहीं कर रहा है। जब तक हमारी मानसिक स्थिति शक्तिशाली नहीं होगी तब तक हम किसी के साथ भी लिव टुगेदर का भाव नहीं अपना सकते। यही कारण है कि रिश्ता बनना तथा विगड़ना आम बात हो गयी है। जरा सा उपर नीचे हुआ गैपिंग शुरू हो जाती है। सम्बन्धों में समानता तभी आ सकती है जब हमारे अन्दर आत्मा के मौलिक गुण पवित्रता, स्नेह, शान्ति, आत्मिक प्यार, नि:स्वार्थ भाव, मधुरता, सहनशीलता आदि का समावेश हो।

इन मूल्यों को न तो कहीं से खरीदा जा सकता और न तो इसको किसी के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह तो आत्मा के मौलिक गुण है जो हर कोई मौन की गुफा में जाकर इसको जागृत कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है आन्तरिक मनन की। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इसको जागृत कर सकता है। तभी लिव टुगेदर की पूर्ण सार्थकता हो सकती है और सुन्दर, संगठित और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना की परिकल्पना साकार हो सकती है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com